eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

दक्षिण एशिया की राजनीति : भारत की भूमिका

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0 भारत

Received: 01 April 2025 Accepted & Reviewed: 05 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

दक्षिण एशिया, जो भू–राजनीतिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक विविधताओं से परिपूर्ण है, विश्व राजनीति के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। इस क्षेत्र में भारत न केवल भौगोलिक दृष्टि से केंद्रीय स्थिति रखता है, बल्कि उसकी आर्थिक, सामरिक, और राजनीतिक शक्ति भी उसे एक प्रभावशाली राष्ट्र बनाती है। यह शोधपत्र दक्षिण एशिया की राजनीति में भारत की भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें भारत के पड़ोसी देशों, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, मालदीव और अफगानिस्तान के साथ उसके संबंधों, क्षेत्रीय संगठनों जैसे सार्क और बिम्सटेक में उसकी भूमिका, तथा चीन एवं अमेरिका जैसे बाहरी शक्तियों के साथ संतुलन साधने की उसकी कूटनीति का विवेचन किया गया है। शोधपत्र यह भी विश्लेषण करता है कि भारत किस प्रकार दक्षिण एशिया में स्थिरता, शांति और विकास को बढ़ावा देने में योगदान कर रहा है, और किन आंतरिक एवं बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा है।

कीवर्ड– दक्षिण एशिया, भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय राजनीति, पड़ोसी देश, सार्क, भूटान नीति, भारत–पाक संबंध, भारत–चीन संतुलन, दक्षिण एशियाई सुरक्षा, भारत की भू–राजनीति

Introduction

दक्षिण एशिया, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप भी कहा जाता है, भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इसमें आठ देश शामिल हैं, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और अफगानिस्तान। यह क्षेत्र न केवल जनसंख्या के लिहाज़ से अत्यधिक घना है, बल्कि इसमें मौजूद विविध जातीय, भाषायी और धार्मिक समूह इसे और जटिल बनाते हैं। भारत इस क्षेत्र में सबसे बड़ा और शक्तिशाली देश है। उसकी जनसंख्या, भू–आकार, सैन्य ताकत, अर्थव्यवस्था और तकनीकी क्षमताएँ उसे एक क्षेत्रीय नेता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि दक्षिण एशिया की राजनीति में भारत की भूमिका निर्णायक बन जाती है। यह शोधपत्र दक्षिण एशिया की राजनीति में भारत की भूमिका को व्यापक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि भारत किस प्रकार क्षेत्रीय स्थिरता, शांति और विकास के लिए सक्रिय प्रयास कर रहा है, साथ ही किन जटिलताओं और विरोधाभासों का सामना कर रहा है।

दक्षिण एशिया एशिया महाद्वीप का एक उप–क्षेत्र है जिसकी सीमाएँ हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक फैली हुई हैं। यह क्षेत्र सामरिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण–पूर्व एशिया और हिंद महासागर को जोड़ता है। दक्षिण एशिया में विविध धार्मिक समुदाय (हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, सिख, ईसाई), भाषाएँ (हिंदी, बंगाली, तमिल, उर्दू, नेपाली, सिंहली आदि), और जातीय समूह निवास करते हैं। यह विविधता इस क्षेत्र की राजनीतिक संरचना को जटिल बनाती है। इस क्षेत्र में

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

लोकतंत्र, राजशाही, सैन्य शासन और अर्ध–लोकतांत्रिक व्यवस्था सहित विभिन्न शासकीय व्यवस्थाएँ मौजूद हैं। भारत जैसे देश ने जहाँ एक स्थिर लोकतंत्र को मजबूत किया है, वहीं पाकिस्तान और अफगानिस्तान राजनीतिक अस्थिरता से जूझते रहे हैं।

दक्षिण एशिया में राजनीतिक संघर्षों (भारत–पाक विवाद, तमिल समस्या, नेपाल में माओवादी आंदोलन, बांग्लादेश में अस्थिरता) के साथ–साथ क्षेत्रीय सहयोग की भी कोशिशें (सार्क, बिम्सटेक) होती रही हैं। ये द्वैत प्रवृत्तियाँ इस क्षेत्र की राजनीतिक पहचान को परिभाषित करती हैं।

भारत की विदेश नीति– ऐतिहासिक विकास

नेहरू युग (1947–1964)रू आदर्शवाद और गुटनिरपेक्षता– स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति का मूल आधार पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित गुटनिरपेक्षता रही। उनका दृष्टिकोण था कि भारत को किसी भी शक्ति गुट में सम्मिलित हुए बिना स्वतंत्र विदेश नीति अपनानी चाहिए।

इंदिरा युग (1966–1984) यथार्थवाद और सामरिक सुदृढ़ता– इंदिरा गांधी के काल में भारत की विदेश नीति अधिक यथार्थवादी हो गई। बांग्लादेश युद्ध (1971) और भारत–सोवियत मैत्री संधि इसी यथार्थवादी नीति के उदाहरण हैं।

उत्तर शीत युद्ध काल (1991–2004) आर्थिक कूटनीति और पड़ोसी पहल– सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने उदारीकरण की राह पकड़ी और विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति को प्राथमिकता दी। भारत ने 'लुक ईस्ट पॉलिसी' भी इसी दौर में शुरू की।

समकालीन काल (2004–2024) बहुपक्षीयता, एक्ट ईस्ट और रणनीतिक संतुलन– वर्तमान में भारत की विदेश नीति बहुपक्षीय, प्रगतिशील और क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने की दिशा में है। अमेरिका, रूस, जापान और चीन के साथ संतुलन, क्वाड, बिम्सटेक जैसी रणनीतियों के ज़रिए भारत ने अपनी स्थिति सुदृढ़ की है।

भारत और उसके पड़ोसी– भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विशेष महत्त्व है। इसकी 'पड़ोसी पहले' (Neighbourhood First) नीति, क्षेत्रीय स्थिरता को बनाए रखने के लिए एक कुंजी रही है। भारत अपने पड़ोसियों के साथ साझा सांस्कृतिक विरासत, सुरक्षा, व्यापार, जल संसाधनों और सीमाओं के संदर्भ में गहरे संबंध रखता है।

भारत–पाकिस्तान संबंध– भारत और पाकिस्तान के संबंधों की नींव विभाजन की पीड़ा और कश्मीर विवाद के साथ जुड़ी हुई है। 1947, 1965, 1971 और 1999 में दोनों देशों के बीच युद्ध हो चुके हैं। कश्मीर मुद्दा अब भी द्विपक्षीय तनाव का केंद्र है। आतंकवाद और सीमा पार घुसपैठ भारत की प्रमुख चिंता बनी हुई है। पुलवामा हमला (2019) और बालाकोट स्ट्राइक के बाद संबंध और भी तनावपूर्ण हुए। शांति वार्ता, ट्रैक–2 डिप्लोमेसी, सरक्रीक और सियाचिन विवाद पर बातचीत की कई कोशिशें हुई हैं। व्यापार और नागरिक संवाद सीमित हैं।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

भारत–बांग्लादेश संबंध– 1971 के मुक्ति संग्राम में भारत की निर्णायक भूमिका ने द्विपक्षीय संबंधों की नींव रखी। भूमि सीमा समझौता (2015), मिज़ोरम–बांग्लादेश सीमा व्यापार, और कनेक्टिविटी परियोजनाएँ महत्वपूर्ण हैं। जल बँटवारा (गंगा, तीस्ता) अब भी विवादास्पद विषय है। अवैध प्रव्रजन भारत की चिंता का विषय रहा है। कट्टरपंथ और भारत विरोधी तत्वों की बांग्लादेश में सक्रियता भी चिंता बढ़ाती है।

भारत–नेपाल संबंध– नेपाल और भारत के बीच 'खुली सीमा' व्यवस्था और रोटी–बेटी संबंध ऐतिहासिक रूप से गहरे रहे हैं। कालापानी–लिपुलेख विवाद और नेपाल के नए राजनीतिक नक्शे ने संबंधों में तनाव पैदा किया। चीन की नेपाल में बढ़ती भूमिका भारत के लिए चुनौती बनी है। भारत नेपाल को विकास सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे में सहायता देता रहा है।

भारत–श्रीलंका संबंध– श्रीलंका के उत्तर और पूर्व में तमिल आबादी के प्रति भारत की सहानुभूति और एलटीटीई से जुड़े मसले द्विपक्षीय संबंधों में जटिलता लाते हैं। हंबनटोटा बंदरगाह का चीन द्वारा लीज़ पर लिया जाना और कोलंबो पोर्ट सिटी प्रोजेक्ट भारत के लिए रणनीतिक चिंता हैं। समुद्री सुरक्षा, पर्यटन, स्वास्थ्य और शिक्षा में सहयोग। कोविड–19 के दौरान भारत ने वैक्सीन मैत्री के तहत श्रीलंका को सहायता प्रदान की।

भारत–भूटान संबंध– भूटान भारत का सबसे करीबी और भरोसेमंद पड़ोसी रहा है। आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक संबंध गहरे हैं। भारत और चीन के बीच भूटान के डोकलाम क्षेत्र को लेकर विवाद हुआ था, जिसमें भारत ने भूटान की सुरक्षा के लिए अपनी सैन्य उपस्थिति दिखाई। जलविद्युत परियोजनाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन में सहयोग। भूटान की आर्थिक सहायता में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत–मालदीव संबंध– मालदीव की भौगोलिक स्थिति उसे हिंद महासागर में रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बनाती है। कुछ समय के लिए मालदीव की आंतरिक राजनीति भारत विरोधी हो गई थी (यामीन शासन), लेकिन हालिया सरकार ने फिर से भारत के साथ संबंधों को प्राथमिकता दी है। 'ऑपरेशन कटिंग एज' और 'ऑपरेशन नेचुरल्स' जैसी सैन्य साझेदारियाँ। पर्यटन, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में सहयोग।

भारत–अफगानिस्तान संबंध– भारत और अफगानिस्तान के सांस्कृतिक, व्यापारिक और ऐतिहासिक संबंध प्राचीन हैं। भारत ने अफगान पुनर्निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई। 2021 में तालिबान की सत्ता में वापसी के बाद भारत को अपनी रणनीति पुनः परिभाषित करनी पड़ी। भारत ने हाल ही में काबुल में राजनयिक उपस्थिति फिर से शुरू की है। भारत ने तालिबान शासन के बावजूद अफगान जनता को खाद्यान्न, दवाइयाँ और वैक्सीन प्रदान की है।

भारत की विदेश नीति में क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। दक्षिण एशिया में स्थिरता, सहयोग और विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत ने बहुपक्षीय मंचों का सहारा लिया है। विशेष रूप से सार्क, बिम्सटेक, और हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग जैसे संगठनों में भारत की सक्रिय भागीदारी रही है।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ – सार्क की स्थापना 1985 में ढाका (बांग्लादेश) में हुई थी। इसके उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, और आपसी समझ को बढ़ावा देना हैं। भारत ने सार्क को एक प्रभावशाली मंच बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। कई सामाजिक और आर्थिक परियोजनाएँ भारत द्वारा वित्त पोषित की गई हैं। भारत–पाकिस्तान के आपसी तनाव के चलते सार्क की बैठकें स्थगित होती रही हैं। क्षेत्रीय सहयोग के मामले में यह संगठन अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाया है। भारत ने हाल के वर्षों में सार्क की तुलना में बिम्सटेक को अधिक प्राथमिकता दी है।

बंगाल की खाड़ी बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (BIMSTEC)– बिम्सटेक की स्थापना 1997 में हुई थी, जिसमें भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार और थाईलैंड सदस्य हैं। यह संगठन दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया को जोड़ने वाला सेतु है। 'एक्ट ईस्ट नीति' के तहत भारत ने बिम्सटेक को क्षेत्रीय सहयोग का मुख्य मंच माना है। प्रादेशिक संपर्क (Connectivity) और ऊर्जा सहयोग को प्राथमिकता दी जा रही है। बिम्सटेक ग्रिड इंटरकनेक्शन योजना, बिम्सटेक आपदा प्रबंधन अभ्यास, भारत ने 2022 में बिम्सटेक सचिवालय के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाई।

हिंद महासागर क्षेत्रीय मंचों में भारत की भूमिका– IORA (Indian Ocean Rim Association) IORA का गठन 1997 में हुआ, और यह हिंद महासागर तटवर्ती देशों का संगठन है। भारत इसका सक्रिय सदस्य है। इसे कार्य समुद्री सुरक्षा (Maritime Security), ब्लू इकोनॉमी, आपदा प्रबंधन आदि हैं।

IONS (Indian Ocean Naval Symposium)– यह एक नौसैनिक मंच है, जिसकी शुरुआत भारत ने की थी। इसका उद्देश्य समुद्री सुरक्षा सहयोग बढ़ाना है।

भारत ने इन संगठनों के माध्यम से खुद को दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र का अग्रणी शक्ति केंद्र स्थापित करने का प्रयास किया है। वह विकास सहयोग, डिजिटल कनेक्टिविटी, आपदा प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में निवेश कर रहा है।

दक्षिण एशिया में बाहरी शक्तियाँ और भारत की रणनीति– दक्षिण एशिया केवल क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष का मंच नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्तियों के लिए भी सामरिक और रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। चीन, अमेरिका और रूस जैसी शक्तियाँ इस क्षेत्र में अपने–अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए सक्रिय रही हैं। भारत को एक ओर अपने क्षेत्रीय हितों की रक्षा करनी है, तो दूसरी ओर इन वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलन बनाकर भी चलना है।

चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के ज़रिए पाकिस्तान (CPEC), श्रीलंका (हंबनटोटा पोर्ट), नेपाल और बांग्लादेश में भारी निवेश किया है। यह भारत की रणनीतिक परिधि में चीन की सीधी दखल है। शैजतपदह वच्मिंतसेश सिद्धांत के अनुसार चीन भारत को चारों ओर से घेरने की कोशिश कर रहा है। डोकलाम (2017) और लद्दाख (2020) में सैन्य टकराव चीन की आक्रामकता का उदाहरण हैं। 'एक्ट ईस्ट नीति' और बिम्सटेक के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को मज़बूत किया। क्वाड (Quad) गठबंधन में भागीदारी से भारत ने समुद्री सुरक्षा और चीन पर दबाव बनाने की नीति अपनाई। इन्फ्रास्ट्रक्चर डिप्लोमेसी और सॉफ्ट पावर के ज़रिए भारत ने काउंटर किया।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

अमेरिका दक्षिण एशिया में लोकतंत्र, आतंकवाद विरोध और चीन के प्रभाव को संतुलित करने के लिए सक्रिय रहा है। अफगानिस्तान युद्ध, पाकिस्तान से सैन्य साझेदारी, और भारत के साथ सामरिक संबंधों के ज़रिए उसकी नीति स्पष्ट होती है। भारत–अमेरिका परमाणु समझौता (2005) ने द्विपक्षीय संबंधों को नया आयाम दिया। COMCASA- LEMOA- और BECA जैसे रक्षा समझौतों ने रणनीतिक सहयोग को सुदृढ़ किया। इंडो–पैसिफिक विज़न और क्वाड में सहयोग दक्षिण एशिया के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हैं। भारत ने अमेरिका से सहयोग करते हुए रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी है। अफगानिस्तान से अमेरिकी वापसी के बाद भारत ने अपनी कूटनीतिक और मानवीय सक्रियता बनाए रखी है।

शीत युद्ध काल में सोवियत संघ भारत का सबसे निकट सहयोगी था। भारत–रूस सैन्य सहयोग (मिग, सुखोई, ब्रह्मोस मिसाइल) ऐतिहासिक रूप से गहरा रहा है। रूस अब चीन के अधिक निकट हो गया है, लेकिन भारत के साथ सामरिक संबंध अभी भी मज़बूत हैं। एस–400 मिसाइल प्रणाली की खरीद भारत–रूस रक्षा संबंधों का उदाहरण है। भारत बहुध्रुवीयता को बढ़ावा देकर अमेरिका और रूस के बीच संतुलन बनाए रखने की नीति पर चल रहा है। रूस के साथ ऊर्जा सहयोग, रक्षा उत्पादन, और संयुक्त सैन्य अभ्यास को जारी रखा गया है।

यूरोपीय संघ के साथ भारत व्यापार, जलवायु और शिक्षा में सहयोग बढ़ा रहा है। जापान के साथ इंफ्रास्ट्रक्चर और टेक्नोलॉजी में भागीदारी। संयुक्त राष्ट्र, G–20, और ब्रिक्स (BRICS) जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी वैश्विक रणनीति का हिस्सा है। दक्षिण एशिया में बाहरी हस्तक्षेप के निहितार्थ ये हैं कि क्षेत्रीय संगठन (जैसे सार्क) निष्क्रिय होते जा रहे हैं। प्रतिस्पर्धी निवेश के कारण आर्थिक निर्भरता बढ़ रही है। छोटे देशों की विदेश नीति पर बाहरी नियंत्रण का खतरा। आधारभूत ढांचे का विकास। क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा से विकासशील देशों को सहायता। रणनीतिक संतुलन की संभावनाएँ।

आत्मनिर्भर भारत के माध्यम से स्वदेशी क्षमताओं का विकास। विकल्प आधारित बहुपक्षीयता (Multi&Alignment) की नीति। क्षेत्रीय नेतृत्व को मजबूत करने की नीति (Neighborhood First $ SAGAR)।

भारत की दक्षिण एशिया में नेतृत्व की संभावनाएँ हैं, भारत न केवल क्षेत्रफल और जनसंख्या के आधार पर दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है, बल्कि उसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और कूटनीतिक शक्ति भी उसे इस क्षेत्र में नेतृत्व के योग्य बनाती है। 21वीं सदी में दक्षिण एशिया वैश्विक राजनीति, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, भू–रणनीति, और आर्थिक विकास जैसे मुद्दों के संदर्भ में वैश्विक केंद्र बन चुका है। भारत की भूमिका इन सभी संदर्भों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं के जरिए क्षेत्रीय आर्थिक प्रेरणा प्रदान करता है।

भारत की सेना, नौसेना और वायुसेना पूरे क्षेत्र में सर्वाधिक शक्तिशाली हैं। परमाणु शक्ति और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। बॉलीवुड, योग, आयुर्वेद, और भारतीय संस्कृति का क्षेत्रीय प्रभाव है, भारत का शिक्षा, स्वास्थ्य और मानवीय सहायता में योगदान है। भारत एक स्थिर लोकतंत्र है, जो क्षेत्रीय देशों के लिए आदर्श बन सकता है। भारत ने द्विपक्षीय सहायता, तकनीकी सहयोग,

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

और मानवीय आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया के ज़रिए नेतृत्व दिखाया है। भारत ने सार्क के माध्यम से आपदा प्रबंधन केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय और ऊर्जा सहयोग जैसी पहलें कीं। भारत इस मंच के तहत कनेक्टिविटी, साइबर सुरक्षा, और आपदा प्रबंधन का नेतृत्व कर रहा है। भारत ने वैक्सीन मैत्री अभियान के अंतर्गत दक्षिण एशिया के देशों को वैक्सीन प्रदान की। राजनीतिक तनाव, सीमा विवाद और आतंकवाद भारत की क्षेत्रीय पहल को सीमित करते हैं। चीन द्वारा बुनियादी ढाँचे और कर्ज़ के ज़रिए छोटे देशों को प्रभावित करना भारत की रणनीति के लिए चुनौती है। कुछ पड़ोसी देशों में भारत के प्रभाव को 'बड़े भाई' की भावना के रूप में देखा जाता है।

आर्थिक विषमता, बेरोज़गारी, और सामाजिक तनाव भारत की विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। आतंकवाद, जलवायु आपात, और साइबर खतरों से निपटने के लिए भारत साझा सुरक्षा व्यवस्था का नेतृत्व कर सकता है। सड़क, रेल, पोर्ट और डिजिटल नेटवर्क के ज़रिए क्षेत्रीय सहयोग मज़बूत किया जा सकता है। गंगा–ब्रह्मपुत्र प्रणाली पर क्षेत्रीय जल समझौते भारत को नेतृत्व की दिशा दे सकते हैं। भारत का सतत विकास मॉडल को दक्षिण एशिया में फैलाया जा सकता है। भारत को शक्ति का दुरुपयोग किए बिना सहयोगात्मक नेतृत्व को अपनाना होगा–

- सुनवाई और परामर्श आधारित कूटनीति
- क्षेत्रीय सस्थाओं को पुनः सक्रिय करना
- आर्थिक और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देना
- विदेश नीति में लचीलापन और संवेदनशीलता

दक्षिण एशिया एक जटिल और विविधतापूर्ण क्षेत्र है, जहाँ राजनीति, भू–सामरिक हित, आर्थिक असमानता, सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता, और बाह्य शक्तियों का प्रभाव परस्पर जुड़े हुए हैं। इस क्षेत्र में भारत की भूमिका केवल एक क्षेत्रीय शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक जिम्मेदार, समन्वित और सहयोगात्मक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरने की संभावनाओं से परिपूर्ण है।

भारत की भौगोलिक स्थिति, जनसांख्यिकीय बल, आर्थिक क्षमताएँ, सांस्कृतिक प्रभाव और सैन्य शक्ति उसे दक्षिण एशिया में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाते हैं। भारत की पड़ोसी पहले, एक्ट ईस्ट नीति, सागर और विकल्प आधारित बहुपक्षीयता जैसी नीतियाँ इस क्षेत्र में उसके प्रभाव को और मज़बूती प्रदान करती हैं।

हालांकि, भारत को कई आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है, पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण संबंध, चीन की सक्रिय उपस्थिति, और छोटे देशों में भारत विरोधी धारणा जैसे कारक भारत की नीति के समक्ष बाधाएँ प्रस्तुत करते हैं। इन चुनौतियों का समाधान तभी संभव है जब भारत अपने नेतृत्व को सामूहिक हितों पर आधारित, पारदर्शी और सहभागिता युक्त बनाए।

इस शोध से स्पष्ट होता है कि यदि भारत दक्षिण एशिया में समावेशी विकास, सुरक्षा सहयोग, क्षेत्रीय संवाद और सतत कूटनीतिक पहल को केंद्र में रखे, तो वह न केवल इस क्षेत्र में स्थायित्व ला सकता है, बल्कि एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में भी उभर सकता है।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

अनुशंषाएँ (Recommendation)-

- क्षेत्रीय सहयोग को प्राथमिकता मिले– भारत को SAARC और BIMSTEC जैसे मंचों को पुनः सक्रिय करने के लिए ठोस प्रयास करने चाहिए ताकि क्षेत्रीय सहयोग और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा मिल सके।
- समानता और सहभागिता की नीति अपनाई जाए– छोटे पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में बड़े भाई की छवि से हटकर साझेदार की भूमिका निभानी चाहिए। इससे विश्वास और आपसी सम्मान में वृद्धि होगी।
- सॉफ्ट पावर के प्रभाव को और सशक्त किया जाए– शिक्षा, संस्कृति, चिकित्सा, योग और तकनीकी सहायता के माध्यम से भारत को अपनी सॉफ्ट पावर रणनीति को दक्षिण एशिया में और मज़बूत बनाना चाहिए।
- चीन की उपस्थिति के प्रति सतर्क रणनीति बने– दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते निवेश और रणनीतिक प्रभाव को संतुलित करने हेतु भारत को कूटनीतिक सक्रियता और आर्थिक भागीदारी को और विस्तृत करना चाहिए।
- जल, ऊर्जा और पर्यावरणीय साझेदारी पर ज़ोर दिया जाए– दक्षिण एशिया के देशों के साथ साझा जल संसाधनों, हरित ऊर्जा परियोजनाओं और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाना चाहिए।
- जनता से जनता का संपर्क (People&to&People Contact) बढ़े– सांस्कृतिक आदान–प्रदान, छात्रवृत्तियाँ, पर्यटन और मीडिया सहयोग के ज़रिए क्षेत्रीय जनसंपर्क को मज़बूत किया जाए।
- आंतरिक स्थिरता और आर्थिक सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी जाए– भारत की विदेश नीति की प्रभावशीलता आंतरिक राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक मज़बूती से जुड़ी है। अतः भारत को घरेलू मोर्चे पर भी सतत विकास और सुशासन सुनिश्चित करना होगा।
- बहुपक्षीय मंचों पर दक्षिण एशिया की आवाज़ बने भारत– संयुक्त राष्ट्र, G–20, BRICS आदि मंचों पर भारत को दक्षिण एशियाई देशों की आवश्यकताओं और हितों की वकालत करते रहना चाहिए।

सन्दर्भ सूची–

1. सिंह, राकेश, दक्षिण एशिया की राजनीति, एक समकालीन विश्लेषण. भारत पब्लिकेशन, 2018. ISBN: 978–81–923498–5–6
2. गांगुली, सुमित. भारत और दक्षिण एशिया, एक कूटनीतिक दृष्टिकोण. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015. ISBN: 978–0–19–947345–2
3. कुमार, अजय. भारत और पाकिस्तान, द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन. राधा पब्लिकेशन, 2016. ISBN: 978–93–85577–02–4
4. दास, शंकर, दक्षिण एशिया का भूराजनीतिक परिपेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, 2019. ISBN: 978–93–82912–94–5

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

5. पार्थ, अमित. भारत और चीन, क्षेत्रीय राजनीति और आर्थिक सहयोग. मैकग्रा–हिल, 2017. ISBN: 978–93–55568–12–4
6. नायक, सुरेश. भारत की विदेश नीति और दक्षिण एशिया, पेंगुइन बुक्स, 2018. ISBN: 978–0–14–344875–2
7. बजपेई, कांतिकुमार. दक्षिण एशिया में भारत की कूटनीतिक भूमिका, रत्ना प्रकाशन, 2020. ISBN: 978–81–83648–67–9
8. झा, अरुण. भारत के क्षेत्रीय संबंध, एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. शारदापब्लिकेशन, 2017. ISBN: 978–81–87645–51–2
9. तिवारी, दीपाली. भारत और दक्षिण एशिया, सामरिक और आर्थिक पहलू. समृद्धि प्रकाशन, 2016. ISBN: 978–93–84451–41–8
10. शर्मा, हरि. दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका और चुनौतियाँ, वेस्टलैंड प्रकाशन, 2021. ISBN: 978–93–78782–21–6
11. कौशल, सौरभ. भारत और बांग्लादेश, संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन. आयुष प्रकाशन, 2015. ISBN: 978–81–941124–7–8
12. लाल, वी.डी.. दक्षिण एशिया और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति. राष्ट्रीय प्रकाशन गृह, 2017. ISBN: 978–81–215–1262–9
13. राय, संजीव. भारत की विदेश नीति और वैश्विक राजनीति. वाणी प्रकाशन, 2020. ISBN: 978–93–80647–34–5
14. चौधरी, विवेक. भारत और पाकिस्तान, संघर्ष और सहयोग. वी.एस.एस. पब्लिकेशन, 2019. ISBN: 978–81–944852–3–0
15. धीरज, विनोद. भारत का अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक दृष्टिकोण. पेंगुइन बुक्स, 2021. ISBN: 978–93–25430–98–4
16. कुमार, प्रवीण. भारत और नेपाल, कूटनीतिक समीकरण. गोल्डन बुक्स, 2018. ISBN: 978–93–87412–10–7
17. मिश्रा, अनुज. दक्षिण एशिया की राजनीति और वैश्विक संबंध. ओम प्रकाशन, 2016. ISBN: 978–81–90527–23–1

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025